.. shrI yAdagiri laxmInRisi.nha stotram ..

॥ श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्रम् ॥

नरसिंह रमेश कृपा जलधे
सुरवैरि हिरण्य विदारणतः
नरलोक हितार्दरतस्सततम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ १॥
करुणारसपूर विधेयतयाऽ
सुरबालक बाधनिवारणतः
सममेव विदारितवानसुरम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ २॥
नरकेसरि रूपनिरूपणतः
सुरशेखर रूप निरूपकताम्
गमयन् शमयन् नरलोकरुजम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ३॥
जनताभिमतार्पण शीलपते
भवभीत समुद्धरणैकमते
सुरनायक नायक लोकपते
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ४॥
नरलोकभयानक रूपमिदम्
प्रधितम् रचयन् नरलोकभियाम्
सकलस्यतु शांति करोभिमतः
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ५॥
अवतार गणेश्वति चित्रपदम्
नरकेसरि मिश्रित रूपमिदम्
प्रकटीकुरुतेऽघटिते घटनाम्
तवदिव्यविधाम् नरसिंह विभो! ॥ ६॥
करुणाकलयाखिल लोकमिदम्
सकलार्थ समृद्धि रमाभरणम्
कलयन् जनिकारणकारणभो
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ७॥
पिताश्रीनृसिंहः विभुश्रीनृसिंहः
गतिश्रीनृसिंहः धनम् श्रीनृसिंहः
भजेश्रीनृसिंहम् स भजे श्रिनृसिंहम्
नृसिंहम् भजे यादशैलेशमीशम् ॥ ८॥

नमेज्ञानमात्यंतिको भक्तिभावः
नमेसाधुचर्यात्वमेवासि सर्वम्
इतीवापिविश्वास ऐषः त्वदीयः
त्वदीयोप्यहम् सर्वमेवम् त्वदीयम् ॥ ९ ॥
त्वदीयेसमस्ते मदीयत्वभावात्
चिरात्संभृतात् मोहितोनाथसत्यम्
इदानीम् तु लक्ष्मीशसेवाविशेषात्
निरस्तम् हि मे मोहजातम् समस्तम् ॥ १० ॥
अजानतामयानाथ! जन्मकोटिशतैरपि
कृतानि सर्वपापानि क्षंतव्यानि दयामय ॥ ११ ॥
॥ इति श्री वांगीपुरम् नरसिंहाचार्य विरचितं
श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

Encoded and proofread by Venkata N Vangeepuram
vangeepuram@rediffmail.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated December 16, 2004